मूलाधार चक्र प्रतिमा :

श्री मूलाधार चक्र

मूलाधार चक्र मुद्रा :

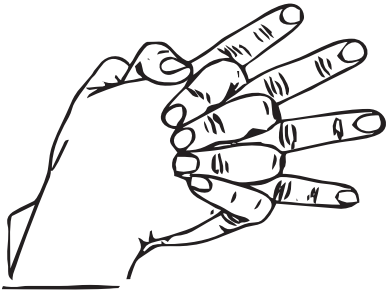

(स्वस्तिमुद्रा)

मूलाधार चक्र गायत्री मन्त्र :

ॐ भूः भुवः स्वः।
ॐ एकदन्ताय विद्महे। वक्रतुण्डाय धीमहि।
तन्नो दन्तिः प्रचोदयात।

मूलाधार चक्र स्वस्तिवाक्य :

मूलाधारगणेशाच्या कृपेमुळे मी संपूर्णपणे सुरक्षित आहे.

मूलाधारगणेश की कृपासे मैं संपूर्ण रूप से सुरक्षित हूँ।

By the grace of the MuladharGanesh, I am completely safe and secure.

मूलाधारगणेशस्य कृपया अहं संपूर्णतः सुरक्षितः।

स्वाधिष्ठान चक्र प्रतिमा :

श्री स्वाधिष्ठान चक्र

स्वाधिष्ठान चक्र मुद्रा :

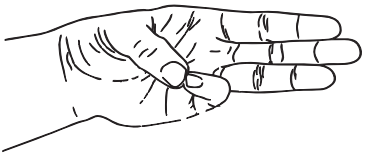

(रसमुद्रा)

स्वाधिष्ठान चक्र गायत्री मन्त्र :

ॐ भूः भुवः स्वः।
ॐ हिरण्यगर्भाय विद्महे। विरंचये च धीमहि।
तन्नो प्रजापतिः प्रचोदयात।

स्वाधिष्ठान चक्र स्वस्तिवाक्य :

प्रजापति–हिरण्यगर्भाच्या कृपेमुळे मी सक्षम आहे आणि मी सुखात आहे.

प्रजापति–हिरण्यगर्भ की कृपा से मैं सक्षम हूँ और मै सुखी हूँ।

By the grace of Prajapti-Hiranyagarbha , I am capable and I am happy.

प्रजापति–हिरण्यगर्भस्यस्य कृपया अहं सक्षमः सुखी च।

मणिपूर चक्र प्रतिमा :

श्री मणिपूर चक्र

मणिपूर चक्र मुद्रा :

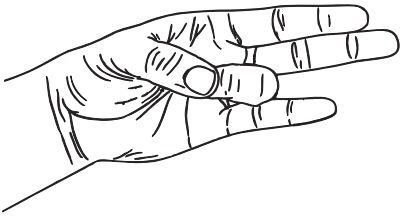

(त्रिविक्रममुद्रा)

मणिपूर चक्र गायत्री मन्त्र :

ॐ भूः भुवः स्वः।
ॐ राघवाय विद्महे। रामचंद्राय धीमहि।
तन्नो श्रीरामः प्रचोदयात।

मणिपूर चक्र स्वस्तिवाक्य :

श्रीरामकृपेने मी यशस्वी आहे.

श्रीराम की कृपासे मैं यशस्वी हूँ।

By the grace of Shreeram I am successful

श्रीरामकृपया अहं यशस्वी।

अनाहत चक्र प्रतिमा :

श्री अनाहत चक्र

अनाहत चक्र मुद्रा :

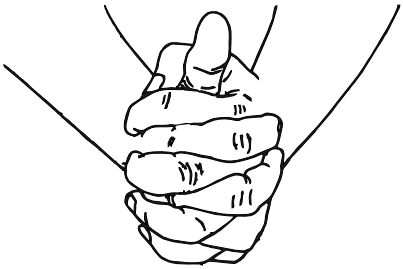

(शिवलिंगमुद्रा)

अनाहत चक्र गायत्री मन्त्र :

ॐ भूः भुवः स्वः।
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे। महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात।

अनाहत चक्र स्वस्तिवाक्य :

माझा पिता त्रिविक्रम मला सदैव क्षमा करतो.

मेरे पिता त्रिविक्रम मुझे सदैव क्षमा करते है।

The Trivikram, my father, always forgives me.

मत्पिता त्रिविक्रमः मां सदैव क्षमां करोति।

विशुद्ध चक्र प्रतिमा :

श्री विशुद्ध चक्र

विशुद्ध चक्र मुद्रा :

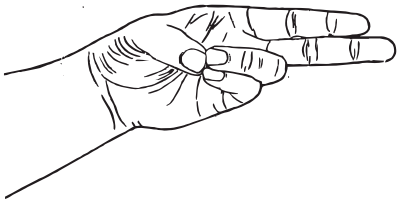

(आंजनेयायमुद्रा)

विशुद्ध चक्र गायत्री मन्त्र :

ॐ भूः भुवः स्वः।
ॐ पुरंदराय विद्महे। वृत्रान्तकाय धीमहि।
तन्नो वेदेन्द्रः प्रचोदयात।

विशुद्ध चक्र स्वस्तिवाक्य :

युद्ध माझा राम करणार। समर्थ दत्तगुरु मूळ आधार।
मी सैनिक वानर साचार। रावण मरणार निश्चित।
युद्ध करेंगे मेरे श्रीराम। समर्थ दत्तगुरु मूल आधार।
मै सैनिक वानर साचार। रावण मरेगा निश्चित।।

My Ram will wage war;
self-sufficient,Dattaguru is the Origin, the Basis;
A solder, I am a vanar in word and in deed
Ravan will die, yes he will.

युद्धकर्ता श्रीरामः मम। समर्थ दत्तगुरुः मूलाधारः।
साचारः वानरसैनिकोऽहम्। रावणवधः निश्चितः।

आज्ञा चक्र प्रतिमा :

श्री आज्ञा चक्र

अज्ञा चक्र मुद्रा :

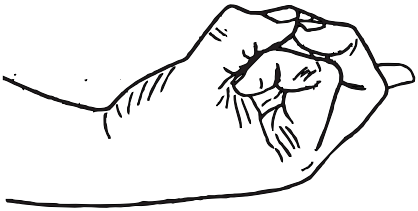

(अंबामुद्रा)

आज्ञा चक्र गायत्री मन्त्र :

ॐ भूः भुवः स्वः।
ॐ महाप्राणाय विद्महे। आञ्जनेयाय धीमहि।
तन्नो हनुमान् प्रचोदयात।

आज्ञा चक्र स्वस्तिवाक्य :

साक्षात श्रीहनुमन्त माझा मार्गदर्शक आहे आणि माझे बोट धरून चालत आहे.

साक्षात् श्रीहनुमानजी मेरे मार्गदर्शक हैं और वे मेरी उँगली पकड़कर चल रहे है।

Shreehanumanta Himself is my guide and He walks holding me by the finger.

साक्षात् श्री हनुमान् मम मार्गदर्शकः तु ा सः मम अंगुलं धृत्वा चलति।

सहस्रार चक्र प्रतिमा :

श्री सहस्रार चक्र

सहस्रार चक्र मुद्रा :

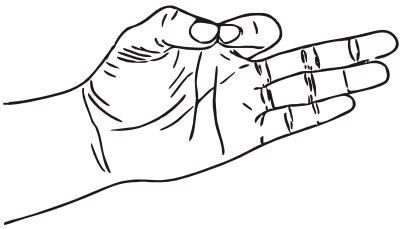

(अवधूतमुद्रा)

सहस्रार चक्र गायत्री मन्त्र :

ॐ भूः भुवः स्वः।
ॐ महासक्ष्मै च विद्महे। सर्वशक्त्यै च धीमहि।
तन्नो जगदम्ब प्रचोदयात।

सहस्रार चक्र स्वस्तिवाक्य :

मी परिपूर्ण आहे.

मी सुशान्तमन–दुर्गादास आहे.

मैं परिपूर्ण हूँ।

मै सुशान्तमन–दुर्गादास हूँ।

I am complete and sufficient.

I am calm, serene and peaceful server of the Mother Durga

अहं परिपूर्णः।

अहं सुशान्तमनोदुर्गादासः।

मातृवाक्य:

माझ्या बालका, मी तुझ्यावर निरंतर प्रेम करीत राहते.

मेरे बच्चे, मै तुम से निरंतर प्रेम करती रहती हूँ।

My dear child, I love You always.

मम बालक, अहं त्वयि निरन्तर स्निह्यामि।